IAS Mentorship

With Reyasat Ali sir & Experienced team in CSE prep

CSE Main 2023: Mini Mock Test 1

Syllabus:	• • Modern History ✓ • •
Name of Candidate	Mohan Mangawa
Email Id	
Date	03/07/23
Time: 1 Hour	Start Time: 7:45
Medium: Hindi / English	End Time: 9:16 PM

Q. No.	Max. Marks	Marks obtained
1	10	
2	10	
3	10	
4	15	
5	15	
6	15	
7	15	
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
Total	90	
Invigilator	Signature	

WhatsApp/Telegram/Text/Call: 8090528260

IAS Mentorship

By Reyasat Ali & Team I 8090528260 Telegram WhatsApp Call

	Excellent	Good	Average	Unsatisfied
Introduction				
Conceptual Understanding				
Contextual Clarity				
Content Enrichment				
Presentation				
Alignment				
Contextual Justification				

Q1. F
helpe

Q1. Post 1857 scenarios like the rise of nationalism, formation of congress and emergence of Gandhi helped to redefine the peasant movements in the twentieth century. Discuss 150 words

कृषक आंदोलन भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के अभिन्न अंग रहे हैं परन्तु 1857 की क्रांति के बाद इनके स्वरूप में कई क्रांतिकारी परिवर्तन आये। इन्होंने कई तरीकों से इन आंदोलनों को पुनः परिभाषित किया।

20वीं शताब्दी में आये परिवर्तन

- नेतृत्व की कमी पूरी होने लगी
  - चंपारण - गांधी, बारदोली - सरदार पटेल
- राष्ट्रीय हितों के साथ एकाकार
  - कृषि आधारित अर्थव्यवस्था
- स्वदेशी व असहयोग आंदोलनों ने शुरुआती किसान आंदोलनों को बढ़ावा दिया।
- गांधी की शुरुआती आंदोलनों में जीत
- कांग्रेस के मुख्य एजेंडों में कृषि सुधार
- अवध किसान सभा व राष्ट्रीय किसान सभा ने जागरूकता फैलाने का कार्य किया ⇒ केरल

में कृषक संघमों का निर्माण, एन.जी रंगा द्वारा जागरूकता कैंप।

परन्तु इसके बावजूद समस्याएं बनी रही -

1) ~~बिना~~ निरन्तर पड़ते अकाल → 1918 का गुजरात
2) कृषि वाणिज्यीकरण ने भू-प्रतिरूप को बदला
3) विदेशी बाजारों से एकीकरण ने बिचौलियों को तो फायदा लेकिन किसान त्रस्त।
4) कांग्रेस द्वारा केवल आंदोलनों के समय ग्रामीण स्वरूप → स्वदेशी आंदोलन मुख्यतः शहरों तक
5) अकाल आयोगों (मैक्सवेल -1927) जैसे द्वारा भारतीय परिस्थितियों का मुल्यांकन नहीं
6) स्थायी बंदोबस्त जैसे सुधारों के कारण जमींदारी को मजबूत किया ⇒ भूमि केन्द्रीयता व भूराजस्व दरें काफी उच्च रही।

इस प्रकार नील आंदोलनो से शुरू हुई यह किसान आंदोलन प्रक्रिया 20वीं सदी में भी जारी रही लेकिन कोई ठोस हल न तो स्वतंत्रता पूर्व निकला और न ही आज 21वीं सदी में।

Q2. Gandhian ideas of non-violence, satyagraha, Sarvodaya, swaraj etc have left an indelible impact on human history. Discuss 150 words

गांधी का अहिंसा व सत्याग्रह संघर्ष प्रक्रिया हीगल-होब्स जैसे दार्शनिकों के विपरीत हैं तथा बिना हिंसा के अनवरत संघर्ष को बढ़ावा देते हैं। इसका न केवल तत्कालीन बल्कि आज तक मानव सभ्यता पर प्रभाव दृष्टिगोचर है।

गांधीवादी आदर्शों का प्रभाव

अहिंसा
1) संघर्ष को दो व्यक्तियों के बीच खून से ना हल करते हुए आंतरिक परिवर्तन द्वारा
2) 'आँख के बदले आँख' के युद्धकारी सिद्धान्तों की भर्त्सना की।
3) भारतीय संविधान का अनु. 50 भी वैश्विक शांति व अहिंसा परमो धर्म की वकालत की वकालत करता है।

सत्याग्रह
- गांधी सत्याग्रह द्वारा अन्यायी के प्रति हृदय-भाव से प्रेम करते हैं

- सत्य का आग्रह मानसिक व दूसरों के प्रति भाव को मिलने पर है।
- संघर्ष हो लेकिन वह आन्तरिक हो ताकि जान-माल सुरक्षित रहे। ⇒ रूस-यूक्रेन युद्ध के समय प्रासंगिक।

सर्वोदय व स्वराज – देश की गरीब जनता के प्रति आत्मीयता भाव

↳ सरकारों को सामाजिक-आर्थिक लोकतंत्र व समाजवाद हेतु प्रोत्साहन

↳ आज जहाँ नीति MPI के तहत 25% जनता गरीबी में है ⇒ तब सर्वोदय भाव प्रासंगिक

↳ स्वराज देश के प्रति व जनता के बीच लोकतंत्र को बढ़ावा देता है ⇒ गांधी की ग्रामीण लोकतंत्र की धारणा ⇒ 73rd 74th CC द्वारा स्थानीय स्वशासन को बढ़ावा।

इस प्रकार गांधी के सिद्धान्त सार्वभौमिक और निरन्तर प्रासंगिक बने हैं तथा वर्तमान परिस्थिति जहाँ संघर्ष, गरीबी, युद्ध का माहौल है तब SDG लक्ष्यपूर्ति हेतु गांधी मार्ग सर्वाधिक उचित है।

Q3. Discuss the causes behind the rise of revolutionary terrorism during the National freedom Movement. Also, discuss its impacts. 150 words

1857 के क्रांतिकारी संघर्ष के बाद भारत में पुनः क्रांतिकारी गतिविधियों का प्रारंभ 1907-1917 व 1924-1932 के दो कालों के बीच हुआ।

कारण।

सामाजिक
- → अंग्रेजों की तुष्टिकरण नीति
- → धार्मिक सांप्रदायिकता का बीज बोने के प्रयास से आहत → बंगाल विभाजन

आर्थिक
- → असमान प्रशुल्क नीतियाँ
- कृषि वाणिज्यीकरण ⇒ अकालों की तीव्रता बढ़ी ⇒ सरकारी सहायता नहीं
- → ड्रेन ऑफ वेल्थ का आभास होना।
- → राजस्व व भू-राजस्व नीतियों से जनमानस त्रस्त।

राजनीतिक → प्रथम-चरण
- → स्वदेशी आंदोलन का दमन
- → तिलक जैसे उग्र नेताओं को जेल में डालना
- → नेतृत्वहीनता → बाल-पाल दोनों निष्क्रिय हुए
- → अनुशीलन समिति, मित्र मेला जैसे क्रांतिकारी गुटों द्वारा निरंतर प्रयास

IAS Mentorship

By Reyasat Ali & Team I 8090528260 Telegram WhatsApp Call

द्वितीय चरण → गांधी द्वारा अकस्मात ~~असह~~ असहयोग वापस लेना ⇒ भाव → उग्रता में बदले

→ HRA व HSRA द्वारा अखिल भारतीय क्रांतिकारी गतिविधियाँ ⇒ काकोरी ट्रेन एक्शन

→ मार्क्सवाद का उदय ⇒ सॉन्डर्स हत्या
व रूसी विचारधारा से प्रेरणा ⇒ CPI व पार्टी 1925 में स्थापना

प्रभाव → सरेआम हत्याएं कर अंग्रेजों में डर व भारतीयों में जोश प्रवाहित ⇒ मुजफ्फरपुर कांड

→ गदर पार्टी जैसे गुटों द्वारा क्रांति हेतु प्रयास ⇒ दिल्ली बम धमाका

→ बर्लिन समिति व आदि गुटों द्वारा विदेशी सहायता व कूटनीति का प्रयोग ⇒ वैश्विक दबाव बनाया

→ भारतीयों को हिंसक संघर्ष हेतु तैयार किया ⇒ QIM-1942 में इसका असर भी हुआ।

इस प्रकार क्रांतिकारी आंदोलनों ने बड़े स्वाधीनता आंदोलनों के बीच जनता को लगातार राजनीतिक चेतना युक्त रखा गया ताकि बीच में संघर्ष का तार ना टूटे।

Q4. Discuss the significance of 19th century reform movements at later stage in India. 250 words

19वी शताब्दी भारतीय समाज-संस्कृति के पुनर्जागरण का काल था जिसमें कई समाज-धर्म सुधारों ने न केवल समाज को बल्कि आने वाले स्वाधीनता आंदोलन को भी प्रभावित किया।

सुधार आंदोलनों का महत्व

↳ ब्रह्म समाज सुधार ने सती प्रथा व स्त्री अस्मिता - सशक्तीकरण पर जोर दिया।

↳ स्वाधीनता आंदोलन में साथ ⇒ उषा मेहता, पंडिता रमाबाई, मारग्रेट नोबेल, भीकाजी कामा जैसी कई सुधारक

↳ आर्य समाज का धर्म संशोधन व शुद्धिकरण आंदोलन → जातिगत रूढ़िगतता की ओर प्रथम कदम → फुले - गांधी - अंबेडकर तक ने आवाज उठाई

↳ आडंबरों व एकेश्वरवाद को बढ़ावा दिया

↳ धार्मिक चेतना का विकास → सहिष्णुता

↳ स्वामी विवेकानंद का राष्ट्र व समाज के बीच संबंध स्थापना - "भूखे से कभी राष्ट्रवाद की उम्मीद नहीं कर सकते, पहले उसका पेट भरो उसके बाद क्रांति।"

⇒ गांधी का सर्वोदय, लोहिया जी की सप्तक्रांति व समाजवाद इसी विचार पर

↳ सावित्रीबाई फुले व रमाबाई रानाडे जैसे महिला सम्मान व शिक्षा पर जोर ने महिला अधिकारों के बारे में चेतना ⇒ मोरकोर्ड सुधार में वोटिंग अधिकार प्राप्ति।

↳ नारायण गुरु का 'एक जाति एक ईश्वर एक धर्म' ने भारतीय धर्मनिरपेक्षता का आधार मजबूत किया ⇒ भारतीय संविधान का मूल ढाँचा तक बना।

↳ साथ ही नारोजी का ब्रिटिश इंडिया एसो०, इंडियन लीग, मद्रास महाजन सभा जैसे संगठनों ने उत्तर-दक्षिण भारत को आसप

जोड़ा व कांग्रेस जैसे संगठन का आधार बनाया।

↳ सैय्यद अहमद खां का मोहम्मडन एंग्लो कॉलेज व डेरोजियो जैसे विचारकों द्वारा वैज्ञानिक शिक्षा पर जोर ⇒ तर्कवाद व भारतीय शिक्षा पद्धति हेतु आधार ⇒ मेकाले आयोग द्वारा वैज्ञानिक शिक्षा ढाँचा अपनाना।

इस प्रकार 19वीं सदी आंदोलनों ने आने वाले भारत के लिए वह आधार बनाया जिन पर हमने स्वतंत्रता प्राप्त करने के साथ-साथ एक आधुनिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर हुए।

Q5. Discuss the main features of Montagu-Chelmsford Reforms. Examine the reasons that they were rejected by most section of political opinion of that time. 250 words

द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान भारतीयों द्वारा सहयोग के बदले उत्तरदायी सरकार की मांग की प्रतिक्रिया मोंटफोर्ड सुधार थे। लेकिन यह भारतीय आकांक्षाओं पर खरा नहीं उतरे।

प्रमुख सुधार

↳ विकेन्द्रीकरण के मार्ग को अपनाया ⇒ द्वैध शासन

- आरक्षित → राज्य गवर्नर
- हस्तांतरित विषय → चुने हुए प्रतिनिधि

↳ शिक्षा व स्थानीय स्वशासन हस्तांतरण के कारण विकास

↳ पृथक निर्वाचन एंग्लो इंडियन व सिक्खों तक विस्तारित।

↳ महिलाओं व कुछ शर्तों के साथ वयस्क मताधिकार

↳ प्रशासनिक सेवाओं हेतु अखिल भारतीय सिविल सेवा संघ व सेवाओं का भारतीयकरण

हिल्टन यंग आयोग गठन (1926 में हुआ)
↳ राज्य विधानमंडलों में सर्वप्रथम गैर-सरकारी सदस्यों का बहुमत। ⇒ उत्तरदायी सरकार की ओर कदम।

लेकिन आलोचना व अस्वीकृति का कारण

1) राज्य स्तर पर मुख्य विषय वित्त, रक्षा, गृह, भूमि जैसे विषय अभी भी आरक्षित
2) पृथक निर्वाचन द्वारा फूट डालो राज करो नीति का प्रसार
3) राज्य गवर्नरों का चुनी हुए सरकार के प्रति उत्तरदायी न होना
4) केन्द्रीय स्तर पर कोई उत्तरदायी सरकार गठन नहीं
5) निर्वाचन अधिकार केवल विशिष्ट वर्ग तक ही सीमित।
6) कांग्रेस की स्वराज्य / डोमिनियन स्टेटस मांग

की अनापूर्ति।

7) सामाजिक - आर्थिक कल्याणकारी कार्यक्रमों का बजटीय प्रावधान नहीं ⇒ बजट अधिकार अभी भी केन्द्र के पास।

8) मंत्रियों की द्वैध भूमिका - "मैं कृषि मंत्री था लेकिन कृषि विभाग मेरे अधीन नहीं था, मैं वन मंत्री था लेकिन वन विभाग मेरे अधीन नहीं था।" के. वी. रेड्डी।

इस प्रकार मोंटफोर्ड सुधारों ने केवल अंग्रेजी शासन मजबूती हेतु प्रावधान किए तथा भारतीय जनमानस को उत्तरदायी शासन देने के वादे को छलावा साबित किया।

Q6. British economic policies from second half of 19th century led to the rapid transformation of Indian economy into colonial economy. Discuss 250 words

ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति और यूरोपीय शक्तियों के बीच चलती वाणिज्यवादी-साम्राज्यवादी अंधी दौड़ ने भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापक बदलाव किए जिनका असर लगभग नकारात्मक ही रहा

1850 के बाद आर्थिक सुधार

↳ ट्रेन व परिवहन में भारी निवेश
↳ आंतरिक बाजारों तक पहुँच हेतु

↳ औद्योगिक विकास व भारतीयों को भी सहयोग ⇒ सूती, जूट कारखाने इसी समय
↳ घरेलू कुटीर कारखानों से मुकाबला हेतु

↳ कृषि का भारी वाणिज्यीकरण
↳ गेहू, बाजरा, चावल जैसी खाद्यान्न के स्थान पर नील, अफीम, कपास को बढ़ावा ⇒ बिचौलियों का आगमन

↳ संस्थागत वित्तीय संस्थानों की शुरुआत
↳ बैंक, बीमा आदि संस्थाएँ आने से पूंजीपतियों को लाभ

↳ 1861 के भारत परिषद सुधार अधि. द्वारा बजटीय प्रावधान ⇒ सरकार द्वारा अंग्रेजी हित वाले क्षेत्रों में निवेश प्रावधान

(प्रभाव) → भारतीय लघु उद्योगों की समाप्ति
↳ कृषि वाणिज्यीकरण के कारण अकाल-खाद्य संकट ⇒ ड्रेन ऑफ वेल्थ
↳ कृषि पर अत्यधिक दबाव ⇒ 1870 का भीषण अकाल
↳ बिचौलियों के मध्यमवर्ग का विकास जो किसान - खरीददार के बीच भारी लाभ कमाता
↳ भारत का केवल कच्चा माल उत्पादक के रूप में पहचान
↳ आंतरिक भागों तक परिवहन पहुँचने

आत्मनिर्भर भारतीय अर्थव्यवस्था का ह्रास किया
↳ विदेशी बाजार से जुड़ाव ⇒ बाजार प्रभावों का नकारात्मक असर ⇒ 1860 का नील कीमत बढ़ोतरी में बिचौलियों को ही फायदा।
↳ किसान व राजनीतिक आंदोलनों को बढ़ावा
↳ नील, पाबना, दक्कन जैसे प्रांतीय आंदोलन

इस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था को उत्पादक से उपभोक्ता बनाकर ब्रिटिश दया पर आश्रित कर दिया गया जिसके आगे चलकर नकारात्मक प्रभाव ही रहे जो वर्तमान में भी (लगभग 85% किसान सीमांत) के रूप में परिलक्षित होते है।

Q7. Discuss the role of press in the building of nationalism and freedom struggle of India. What present press organizations can learn from those in present time? 250 words

1770 में प्रेस के विकास के साथ ही इसने समाज-राजनीति के विभिन्न पहलुओं को जनता के समक्ष रखा और आगे चलकर राष्ट्रवादी आंदोलन में जनतंत्र जुटाने में महत्ती भूमिका अदा की।

प्रेस की भूमिका - राष्ट्रवाद & स्वाधीनता आंदोलन में

- जनता का साक्षरीकरण ⇒ नीतियों की जानकारी
- ब्रिटिश राज्य की दमनात्मक नीतियों का भंडाफोड़
  ⇒ भारतेन्दु की कविवचनसुधा
- राष्ट्रवादी माहौल को बनाने में सहयोग
  ⇒ सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का 'द बंगाली'
- भारतीय जनमानस की धार्मिक-राजनीतिक सामग्री हेतु प्रथम स्रोत ⇒ तिलक द्वारा 'केसरी', 'मराठा' द्वारा गणेश उत्सव आह्वान
- गांधी का 'यंग इंडिया' ⇒ सरकार-जनता के बीच वार्तालाप का जरिया बना

↳ राजनीतिक कार्यविधि व मॉड्यूल का प्रचारण जनता तक कर ⇒ जनता - नेताओं के बीच सेतु का कार्य

↳ सत्याग्रह, अहिंसा, सहिष्णुता आदि के भावों को जनता को समझाने में प्रयोग हुआ।

↳ महिलाओं, दलितों की दयनीय स्थिति को मुख्य धारा में लाया ⇒ एनी बेसेंट का कॉमनवील

↳ संपूर्ण भारत के नेताओं को आपस में जोड़ने व एकरूपता लाने का कार्य ⇒ कांग्रेस निर्माण में सुरेन्द्रनाथ के अखबारों का महत्व।

अत: इनकी सकारात्मक भूमिका को आज के अखबार - पत्रकारों को सीखने की जरूरत है

① कट्टरता व सनसनीखेज न्यूज के बजाय सकारात्मकता पर जोर

② विचारधारा की ओर मुड़कर एक ही पक्ष का उद्घाटन से खुद को बचाना

↳ संवेदनशील वर्गों के प्रति विशेष दृष्टिकोण का विकास कर => सरकारों पर दबाव बनाना

↳ आधुनिक नवाचारों यू-ट्यूब, फेसबुक, व्हाट्सएप आदि संचार माध्यमों द्वारा समाज के निचले स्तर तक पत्रकारिता को लेकर जाना

↳ देश के प्रति सम्मान के साथ समस्याओं का एक मौलिक समाधान हेतु लोगों के प्रयासों को भी आगे लाना। => वैदिक जागरण में घूमने वाला "नवाचार खंड" ।

↳ जनता का मुखपत्र व आवाज बनकर सरकारों को जवाबदेही बनाना

इस प्रकार लोकतंत्र के इस चौथे स्तंभ ने 19वीं सदी से ही जो भूमिका निभाई है उसे आगे बढ़ाते हुए सत्यनिष्ठा के साथ देश-निर्माण हेतु कार्य करने की जरूरत है।